IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

मुक्तिबोध के काव्य में श्रमिक जीवन के विविध आयाम

डॉ. एन.पी. प्रजापति
सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष 'हिंदी'
शासकीय अग्रणी महाविद्यालय बैढन, जिला -सिंगरौली (म.प्र.)

सारांश :- मुक्तिबोध एक ऐसे कवि थे जिन्होंने अपने काव्य में भारतीय समाज की गहरी जड़ों को छुआ। उनके काव्य में श्रमिक,यानी मजदूर वर्ग का जीवन एक प्रमुख विषय रहा है। मुक्तिबोध ने मजदूर के जीवन के विविध आयामों को बड़ी संवेदनशीलता और गहराई के साथ चित्रित किया है। शोषण और उत्पीड़न,सामाजिक यथार्थ,समाज में व्याप्त आर्थिक असमानता को उजागर किया है. उनके काव्य में मजदूर के संघर्ष और विद्रोह,विद्रोह की भावना,समाज में परिवर्तन की चाह,क्रांति की आशा श्रमिकों में जगाई है।वास्तव में श्रमिक अपने अस्तित्व का संकट,असुरक्षा और निराशा से भरे भविष्य के साथ जीवन जीने को विवश रहता है.उसके जीवन में चिंता,अधूरे सपने,मानव जनित अधिकारों से दूर अलगाव और एकाकीपन, की जिन्दगी,रोजी-रोटी और तन ढकने के साथ-साथ अपने रहने के लिए झोपडी का संघर्ष आजीवन लेकर जीने को विवश हैं। इन्ही तमाम पहलुओं पर विस्तार से चर्चा इस शोध आलेख में किया गया है।

बीज शब्द :- श्रमिक,शोषण, अस्तित्व का संकट,असुरक्षा, निराशा, मूल्यों का संकट, रोजी-रोटी, संघर्ष आदि

प्रस्तावना:-

गजानन माधव मुक्तिबोध भारतीय समाज की बुनावट को बहुत ही महीन तरीके से समझते थे। उनको पता था की भारतीय समाज में श्रमिक इस धरती परज़िंदा रहने के लिए किस तरह से अपने को तपाता है,रात-दिन खटता है। किस तरह से वह पेट भरने मात्र के लिए समाज में दुत्कारा जाता है, कुछ पंक्तियाँ देखिये:-

धरती पर रहने का। अब किससे टंटा करें
कहाँ हम जायें/ अपनों से ऐंठा करें,
ज़िन्दगी एक कबाड़ा है, भूतों का बाड़ा है।[1]

गजानन माधव मुक्तिबोध उन गिने चुने कवियों में थे जिन्होंने मिथक और फैंटेसी के माध्यम से श्रमिक वर्ग के विविध आयाम को अपने रचना का विषय बनाया है. उनकी एक कविता 'मुझे मालूम नहीं' में मजदूर की उस असहाय स्थिति का चित्रण है जिसमें वह यथास्थिति को तोड़ नहीं पाता। वह आजीवन दूसरों के बनाए नियमों तथा मान्यताओं को ढोते हुए चलता है। श्रमिक आजीवन अपनी दिनचर्या को दूसरों के इशारे पर चलाता है। और यह हकीकत है कि दूसरों की सोच स्वार्थ से पूरित और सत्ता के आसपास का चरित्र होता है। सत्ता अपने को स्थापित करने के लिए श्रमिक के सोच की स्थिरीकरण करती है। परन्तु श्रमिक की चेतना कभी- कभी चिंगारी की भांति इस बात का अहसास कराती है कि वह जो सामने का सत्य है उससे आगे भी कुछ है। संवेदनहीन होते व्यक्ति की संवेदना को वह चिंगारी पल भर के लिए जागृत करती है।

ऋण एक राशि का वर्गमूल साक्षात्
ऋण धन तड़ित् की चिनगियों का
आत्मजात
प्रकाश हूँ निज शूल
गणित के नियमों की सरहदें लाँघना
स्वयं के प्रति नित जागना
भयानक अनुभव
फिर भी मैं करता हूँ कोशिश
एक धन एक से
पुन: एक बनाने का यत्न है अविरत![2]

मुक्तिबोध गणित, भौतिकी और नक्षत्र विज्ञान के माध्यम से श्रमिक वर्ग की बात करते हैं. और श्रमिकों की स्थिति पर व्यंग्य करते हैं उन तथाकथित महापण्डितों पर जो अपने अहंकार के मद में रूढ़ियों में

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

जकड़े पड़े हैं उन पर भी व्यंग्य करते हैं। मुक्तिबोध का मानना है की शोषक वर्ग का स्वार्थ इसी में पुष्पित पल्लवित होता है। लेकिन सच्चाई ये है कि जो अवधारणा विकासवान नहीं है वह कालान्तर में नष्ट हो जाती है। ऐसी अवधारणाएं, ऐसी मान्यताएं, ऐसी क्रियाएं जो रूढ़िग्रस्त हैं अवैज्ञानिक हैं उनको एक न एक दिन नष्ट होना ही है। मुक्तिबोध न केवल विज्ञान तथा वैज्ञानिक शब्दावली का चमत्कृत कर देने की हद तक उपयोग करते हैं बल्कि वैज्ञानिक बिम्बों तथा प्रत्ययों के माध्यम से अवैज्ञानिक सोच की निडर होकर तीव्र भर्त्सना भी करते हैं। श्रमिको की वकालत समाज की बुराइयों तथा सड़ांध को मिटाने का आवाहन करते हुए वह कहते हैं :-

पियो कष्ट, खाओ आपत्ति-धतूरा, भागो
विश्व तराशो, देखो तो उस दिशा
बीच सड़क में बड़ा खुला है
एक अंधेरा छेद
एक अंधेरा गोल-गोल
वह निचला-निचला भेद,
जिसके गहरे-गहरे तल में
गहरा गन्दा कीच
उसमें फँसो मनुष्य
घूसो अंधेरे जल में
-गन्दे जल की गैल
स्याह भूत से बनो, सनो तुम
मैन-होल से मनों निकालो मैल.[3]

मुक्तिबोध की कविता 'भविष्यधारा' में एक बड़े सीवर का चित्रण है। मनुष्यता, मानवीय गुण, परोपकार की भावना, सामाजिक सरोकार लगता है जैसे एक बड़ी सीवर लाइन की तलहटी में समा गये हैं। मूल्यहीन समाज, चारों तरफ फैला गहन अंधकार, अनाचार यह सब कैसे साफ होगा इसके लिए 'मैन होल' से सीवर लाइन में घुसना होगा, भूत की तरह बनना और सनना होगा कीचड़ में, तभी मन का मैल निकल पायेगा।

वे सामाजिक सच्चाई का पर्दाफाश करना चाहते हैं, उनका असली चेहरा दिखाना चाहते हैं। उन नीतियों को बदल देना चाहते हैं, जिनके चलते अमीरों के मुख दीप्त और गरीबों के मुख श्रीहीन नजर आते हैं। जिनकी वासना और लिप्सा विक्षिप्त युवतियों को भी नहीं बख्शती और वे उनकी लिजलिजी वासना को ढोने को विवश हो जाती हैं:-

वह पागल युवती सोयी है/ मैली दरिद्र स्त्री अस्त-व्यस्त/
उसके बिखरे हैं बाल व स्तन है लटका सा/
अनगिनत वासना ग्रस्तों का मन अटका था/
उनमें जो उच्छृंखल विश्रृंखल भी था
उसने काले पल में इस स्त्री को गर्भ दिया।[5]

यह है हमारा, हमारी नैतिकता का असली चेहरा. बड़ी-बड़ी बातें करने वाले साहित्यकार, पत्रकार अपने क्षुद्र स्वार्थ के लिए हत्यारों के साथ हो लेते हैं। मुक्तिबोध प्रश्न करते हैं अपने आपसे और अपने बहाने समाज से, हम सबसे। हम सब जो अपनी-अपनी खोल में सिमटे हुए हैं, सबके सब दोषी हैं। मुक्तिबोध की ये पंक्तियां आत्मालोचन करती हैं-

अब तक क्या किया, जीवन क्या जिया।
बताओ तो किस किसके लिए तुम दौड़ गए।
करूणा के दृश्यों से हाथ मुंह मोड़ गए।
बन गए पत्थर। बहुत बहुत लिया।दिया बहुत कम।
मर गया देश अरे जीवित रह गए तुम।[6]

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

अरे तुम जानकार थे, परिस्थितियों को समझकर समाज में चेतना ला सकते थे, शोषण ,उत्पीडन के विरुद्ध लिख सकते थे, बोल सकते थे लेकिन तुम तो अपने स्वार्थ में ऐसे डूबे की मानवता, नैतिकता सभी को निगल गुए और शोषक के साथ हो लिए –

उदरम्भरि बन अनात्म बन गये,
भूतों की शादी में क़नात-से तन गये,
किसी व्यभिचारी के बन गये बिस्तर.[7]

जब प्रबुद्ध वर्ग की आवाज खरीद ली जाती है तो वह फिर अपने मूल विचारों को अपने अभिव्यक्ति में नहीं लाता है बल्कि वह खरीदे हुए मालिक का पक्ष लेना ही अपना धर्म समझने लगता है. जिस समाज का प्रबुद्ध वर्ग बिक जाता है और हाँ में हाँ मिलाने वाली जिन्दगी जीने लगता है तो फिर उस समाज में शोषण, उत्पीडन की पराकाष्ठा को कोई नहीं रोक सकता. ऐसे व्यवस्था में श्रमिक वर्ग पर आये दिन गोली चलना और उनके बस्तियों में आग लगना कोई नई बात नहीं बल्कि यह रूटीन प्रक्रिया बन जाती है :-

बौद्धिक वर्ग है क्रीतदास,
किराये के विचारों का उद्भास।
बड़े-बड़े चेहरों पर स्याहियाँ पुत गयीं।
नपुंसक श्रद्धा
सड़क के नीचे की गटर में छिप गयी,
कहीं आग लग गयी, कहीं गोली चल गयी।[8]

निश्चित रूप से निबर्ल असहाय और पीड़ित की आवाज कवि,लेखक ही बनता है, वाही आवाज उठाता है और अपने रचना में उन तमाम परिस्थियों का चित्रण करता है लेकिन जब वही अपना स्वार्थ का नाल पूंजी पतियों, शोषकों से जोड़ ले तो फिर कौन जगायेगा और कैसे परिवर्तन आयेगा-

सब चुप, साहित्यिक चुप और कविजन निर्वाक्
चिन्तक, शिल्पकार, नर्तक चुप हैं
उनके ख़याल से यह सब गप है
मात्र किंवदन्ती।
रक्तपायी वर्ग से नाभिनाल-बद्ध ये सब लोग
नपुंसक भोग-शिरा-जालों में उलझे।[9]

ऐसा चित्रण मुक्तिबोध के कविताओं में अनायास नहीं है, उनके अन्य कविताओं में भी चुप्पों को कठघरे में खड़ा करने का पैटर्न काफ़ी मिलता है- (भूल ग़लती) कविता में भी प्रबुद्ध वर्ग पर उन्होंने लिखा है-

सब ख़ामोश
मनसबदार, शाइर और सूफ़ी/ अल गजाली,
इब्ने सिन्ना, अल बरूनी
आलिमोफाजिल, सिपहसालार, सब सरदार/ हैं ख़ामोश!"[10]

यही वे 'क्रीतदास' हैं जो अन्याय की औचित्यपूर्णता पर अपनी प्रत्यक्ष-परोक्ष सहमति के माध्यम से यथास्थिति में परिवर्तन नहीं आने देते। और आलोचना के इन्हीं क्षणों में उन्हें महसूस होता है कि कोई है जो उनसे उम्मीदें रखता है। वह अपना अनुभव शिशु उनके सुरक्षित हाथों में सौंपना चाहता है- और उन्हें लगता है कि अब खतरे उठाने का समय आ गया है। वे संकल्प चाहते हैं देश से, समाज से, खासकर अपने आपको देश और समाज का प्रवक्ता कहने वाले लोगों से-

अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे उठाने ही होंगे
तोड़ने ही होंगे मठ और गढ़
पहुंचना होगा दुर्गम पहाड़ों के उस पार
तब कहीं देखने मिलेगी बांहें
जिसमें कि प्रतिपल कांपता रहता अरूण कमल एक।[11]

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

वे शोषणमुक्त अन्याय रहित समाज चाहते हैं। तमाम अंधेरों को भेदकर एक किरण उतारना चाहते हैं, जो खिला सके उम्मीदों का अरूण कमल। मगर अफसोस तो यह है कि कोई साथ नहीं है। सब रक्तपायी व्यवस्था के साथ नाभिनाल आबद्ध हैं-समाज में व्याप्त अंधेरगर्दी और उससे उत्पन्न आमजन की लाचारी को स्वर देती उनकी कविताएं आमजन के पक्ष में खड़ी है। उनका मानना था कि जनता का भय ही उसकी विषम परिस्थितियों के लिए जिम्मेदार है, वरना व्यवस्था इतनी ताकतवर नहीं है कि उसे बदला न जा सके। उनका मानना है कि जनता की भूल गलती ही दिल के तख्त पर विराजमान है-

भूल गलती आज बैठी है जिरह बख्तर पहनकर तख्त पर दिल के ...
खड़ी हैं सिर झुकाए सब कतारें। बेजुबां बेबस सलाम में/
अनगिनत खम्भों व मेहराबों थमे दरबार आम में...[12]

आश्चर्य यह है कि व्यवस्था का वह शहंशाह रेत के ढूह के समान है और उसका जिरहबख्तर मिट्टी का बना है मगर हमारा डर उसे फौलादी बना देता है, हम उसे छूने से, उससे टकराने से डरते हैं। मगर मुक्तिबोध आशा का दामन नहीं छोड़ते, वे स्वप्न देखते हैं कि हममें से ही कोई एक विद्रोह का बीड़ा उठाएगा। वह हमारी ही अनुकृति होगा। हमारे ही हृदय की पुकार होगा-

हमारी हार का बदला चुकाने आएगा
संकल्पधर्मा चेतना का रक्तप्लावित स्वर।
हमारे ही हृदय का गुप्त स्वर्णाक्षर
प्रकट होकर विकट हो जाएगा।[13]

उन्हें मालूम है कि उनके अकेले या उनके जैसे चंद लोगों के लिए इस दुनिया को बदल पाना संभव नहीं है बल्कि वे व्यवस्था के जर्जर महल के मलबे में दबकर रह जाएंगे। मगर उन्हें सुकून है कि वे अपने हिस्से का विद्रोह कर पाएंगे, अव्यवस्था के खिलाफ आवाज तो उठाएंगे-

दु:ख तुम्हें भी है। दुख मुझे भी।
हम एक ढहे हुए मकान के नीचे दबे हैं,
क्योंकि हम बागी थे।
आखिर बुरा क्या हुआ?
पुराना महल था। ढहना था। ढह गया।[14]

मलबे के नीचे दबकर भी वे कोशिश करते हैं, हिम्मत नहीं हारते। वे स्वयं भी कोशिश करते हैं और आशा का संचार भी-

खण्डहर में दबी हुई अन्य धुकधुकियों। सोचो तो
कि स्पन्दन अब पीड़ा भरा उत्तरदायित्व भार हो चला,
कोशिश करो। कोशिश करो ।
जीने की जमीन में गड़कर भी।[15]

मुक्तिबोध की हर कविता एक आईना है – गोल, तिरछा, चौकोर, लम्बा आईना। उसमें चेहरा या चेहरे देखे जा सकते हैं। कुछ लोग इन आईनों में अपनी सूरत देखने से घबराएंगे और कुछ अपनी निरीह-प्यारी गऊ-सूरत को देखकर आत्मदर्शन के सुख क अनुभव करेंगे। मुक्तिबोध ने आरोप, आक्षेप के लिए या भय का सृजन करने के लिए कविता नहीं लिखी – फिर भी समय की विद्रूपता ने चित्रों का आकार ग्रहण किया है – आईनों का। 'अंधेरे में' कविता इस संग्रह का सबसे बड़ा और भयजन्य आईना है...अगर किसी हद तक 'एक साहित्यिक की डायरी', 'चांद का मुंह टेढ़ा है' की कुंजी है तो 'नये साहित्य का सौन्दर्य-शास्त्र', 'भूरी भूरी खाक धूल की'।

और बैलगाड़ी के पहिये भी बहुत बार
ठीक यहीं टूटते/ होती है डाकेजनी
चट्टान अंधेरी पर/ इसीलिए राइफल सम्हाले
सावधान चलते हैं/ चलना ही पड़ता है
क्या करें।/ जीवन के तथ्यों के/ सामान्यीकरणों का

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

करना ही पड़ता है हमें असामान्यीकरण।[16]

जिन्दगी की लड़ाई में बुरी तरह हारकर मुक्तिबोध कविता में जीत जाते हैं। कविता उनके लिए हारिल की लकड़ी थी। किसी ने उनका साथ नहीं दिया। मन, विचार और सपनों के लोक में सिर्फ कविता उनके साथ थी जिसके सहारे उन्होंने अपने आकुल हृदय के भीतर ऐसे उधार और मुक्त समाज को रच लिया जहां वे जी सकते थे।

निष्कर्ष:-मुक्तिबोध के काव्य में मजदूर जीवन का चित्रण एक ऐतिहासिक दस्तावेज के समान है। उन्होंने मजदूरों के जीवन के विभिन्न पहलुओं को बड़ी गहराई और संवेदनशीलता के साथ उजागर किया है। उनके काव्य ने हमें मजदूर वर्ग की समस्याओं के प्रति जागरूक किया है और हमें उनके संघर्ष के लिए प्रेरित किया है।

समस्या एक-
मेरे सभ्य नगरों और ग्रामों में
सभी मानव
सुखी सुंदर व शोषणमुक्त
कब होंगे ?[17]

संदर्भ सूची :-

1.रचनावली खण्ड - 2, पृष्ठ – 126
2.संग्रह : चाँद का मुँह टेढ़ा है, पृष्ठ – 74
3.भूरी भूरी खाक धूल, पृष्ठ-75
4.संग्रह: चाँद का मुँह टेढ़ा है, पृष्ठ – 74
5. संग्रह: चाँद का मुँह टेढ़ा है, पृष्ठ
6. संग्रह: चाँद का मुँह टेढ़ा है
7. संग्रह: चाँद का मुँह टेढ़ा है-अँधेरे में कविता से
8. संग्रह: चाँद का मुँह टेढ़ा है- अँधेरे में कविता से
9. संग्रह: चाँद का मुँह टेढ़ा है- अँधेरे में कविता से
10. संग्रह: चाँद का मुँह टेढ़ा है-भूल गलती कविता से
11. संग्रह: चाँद का मुँह टेढ़ा है
12. संग्रह: चाँद का मुँह टेढ़ा है - भूल गलती कविता से
13. संग्रह: चाँद का मुँह टेढ़ा है- भूल गलती कविता से
14. संग्रह: चाँद का मुँह टेढ़ा है
15. संग्रह: चाँद का मुँह टेढ़ा है
16. इसी बैलगाड़ी को : पृ. 30
17. चकमक की चिनगारियां, चांद का मुंह टेढ़ा है